जिला मानव विकास प्रतिवेदन
बाड़मेर

hcm ripa
Since 1957

जिला मानव विकास प्रतिवेदन

बाड़मेर

भौगोलिक स्थिति

उत्तर में जैसलमेर एवं जोधपुर, दक्षिण में जालौर, पूर्व में जोधपुर, पाली एवं जालौर। इस मरुस्थलीय जिले का क्षेत्रफल 28,387 वर्ग किलोमीटर है एवं यह 24°4′– 26°32′ उत्तर एवं 70°5′ – 72°52′ के मध्य स्थित है। तापमान 48° C से 5°C के बीच। सामान्य वार्षिक वर्षा 26.57 सेन्टीमीटर है।

जल स्त्रोत

जिले में लूणी मुख्य नदी है। सुकड़ी नदी लूणी में मिलती है। लीक नदी, रानीगांव का नाला, कवास व खीमीरियाल छोटी–छोटी नदियां तथा कई छोटी–छोटी बावड़ियां भी हैं, जिन्हें पार्स कहते हैं।

खनिज सम्पदा

सिवाना में ग्रेनाइट की तरह का पत्थर मिलता है। बेंटोनाइट, जिप्सम, सिलिकस तथा नमक से अच्छी आय प्राप्त होती है। लिग्नाइट, रोलाइट व फुलर भी उपलब्ध है।

जनसंख्या

वर्ष 2011 में जिले की जनसंख्या 26.04 लाख थी। राज्य की जनसंख्या का यह 3.79 प्रतिशत है जबकि क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य का यह 8.29 प्रतिशत है। जनसंख्या का घनत्व 92 है। 2001 के अनुसार 15.73 प्रतिशत अनुसूचित जाति और 6.04 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति है। जिले में 2,460 गांव है। ज्यादातर गांवों की जनसंख्या 1,000 से कम है। लिंगानुपात 900 है जो ग्रामीण क्षेत्र में 901 व शहरी क्षेत्र में 892 था। जिले की दशकीय वृद्धिदर 32.55 है। 2001 के अनुसार कुल जनसंख्या का 86.27 प्रतिशत हिन्दू, 11.80 प्रतिशत मुस्लिम, 1.82 प्रतिशत जैन, 0.06 प्रतिशत ईसाई, 0.05 प्रतिशत अन्य हैं।

भूमि, वनस्पति एवं वर्षा

जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 2.82 मिलियन हैक्टेयर है। वर्ष 2008–09 में 1.14 प्रतिशत क्षेत्र वन, 7.2 प्रतिशत चारागाह, 17.93 प्रतिशत पड़त भूमि एवं 59.55 प्रतिशत कृषि के अन्तर्गत था। खेजड़ा, रोहिड़ा, केर, फोग, आँकड़ा, जाल, बेर, बोरड़ी, नीम, पीपल के वृक्षों की यहाँ बहुतायत है। झाडियों एवं घास में मुख्यतः भारुत, सिवान, मकरा, लाथ, धरमासा घास बहुतायत से होती है। सकल फसल

क्षेत्र 17,77,440 हैक्टेयर है। भूजल की स्थिति सम्पूर्ण जिले में चिन्ताजनक है। नर्मदा जल से जालौर एवं बाड़मेर के 233 गाँवों में 2.50 लाख हैक्टेयर भूमि को सिंचित करना सम्भव हुआ। जल की कमी से बड़े स्तर पर लोग आजीविका की तलाश में दूसरे स्थानों में पलायन करते रहे हैं। बाड़मेर में टांका, बेरी आदि में वर्षा जल एकत्रित किया जाता रहा है।

शिक्षा

2011 में जिले की साक्षरता दर 57.49 प्रतिशत। पुरुष साक्षरता 72.32 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता 41.03 प्रतिशत है। जिले में वर्ष 2009–10 में 5,307 प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय, 296 माध्यमिक एवं सी. माध्यमिक विद्यालय एवं 6 महाविद्यालय, एक पोलिटेक्निक तथा तीन आई.टी.आई. हैं। जिले में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में 5.35 लाख विद्यार्थी नामांकित हैं। जिले की वर्ष 2005–06 में ड्राप आउट दर 41.23 प्रतिशत है, जो राज्य के औसत 39.85

प्रतिशत से अधिक है। वर्ष 2009–10 में लैंगिक असमानता जिले में 13.88 प्रतिशत थी जो राज्य के औसत 9.17 से अधिक है। जिले में 8,340 बच्चे भिन्न–भिन्न रूप से विकलांग हैं जो विद्यालयों में नामांकित हैं, इनमें से 34.23 प्रतिशत बालिकायें हैं।

स्वास्थ्य

वर्ष 2010–11 में जिले में 3 अस्पताल, 3 डिस्पेन्सरी, 3 मातृ एवं शिशु कल्याण केन्द्र, 14 सी. एच. सी., 61 ग्रामीण प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र एवं 546 स्वास्थ्य उपकेन्द्र थे। जिले में कुल 630 विभिन्न स्वास्थ्य सुविधायें हैं। जिले में एक आयुर्वेदिक अस्पताल, 100 डिसपेन्सरी हैं। जिले में संचालित राजकीय चिकित्सा संस्थाओं में कुल 1,195 शैय्याएँ उपलब्ध हैं।

जिले में मार्च 2008 में 2,093 आँगनवाड़ी थीं जिनमें से मात्र एक ही कार्यरत नहीं है वहीं सीडीपीओ के 19 पद स्वीकृत थे जिनमें से केवल सात ही कार्यरत थे।

आय एवं श्रमशक्ति

कृषि एवं उससे जुड़े क्षेत्रों से आय का जिले में योगदान 29.7 प्रतिशत है। खनन एवं निर्माण क्षेत्र और सेवा के अतिरिक्त पशुपालन के क्षेत्र का योगदान भी बढ़ा है। सेवा क्षेत्र में व्यवसाय, होटल, भोजनालय, रीयल एस्टेट, परिवहन, बैंकिग, दूरसंचार के क्षेत्र में भी प्रगति हुई है।

वर्ष 2001 में बाड़मेर में 9.20 लाख कुल श्रमिक थे। मुख्य श्रमिकों में से 72.4 प्रतिशत कृषक एवं 2.8 प्रतिशत कृषि श्रमिक हैं। घरेलू उद्योग में मात्र 2.7 प्रतिशत श्रमिक लगे हैं, अन्य श्रमिक सेवा क्षेत्र में हैं जो 22.2 प्रतिशत हैं। जिले में आर्थिक विकास कम होने से अवसरों की विविधता भी न्यून है, किन्तु बाड़मेर में तेल के भण्डार मिलने से प्रति व्यक्ति आय एवं रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं। हस्तशिल्प कार्यक्रम के अन्तर्गत महिलायें 15 उत्पादन केन्द्र चला रही हैं जिनसे 600 से अधिक दस्तकार जुड़े हुये हैं।

2001 की जनगणना के अनुसार यहाँ 2,86,218 ग्रामीण परिवार थे जिनमें से 3,74,604 को रोजगार गारन्टी योजना में जॉब कार्ड दिये गये। वर्ष 2007–08 में 2,77,595 व्यक्तियों द्वारा रोजगार की माँग की गई व उन्हें रोजगार दिया गया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत महिलायें मुख्य रुप से लाभान्वित हुई हैं।

वर्ष 2008–09 में जिले में 187 कारखाने थे, जिनमें 5,218 व्यक्तियों को रोजगार

उपलब्ध था। इसमें से बाड़मेर में 129 कारखाने वस्त्र उद्योग से सम्बद्ध हैं। इसके अतिरिक्त दुग्ध उत्पादन, रसायन उत्पादन, पेन्ट, वार्निश, प्लास्टिक उत्पाद, रसोईघर का सामान, शौचालय एवं घरेलू सामान तथा ईंट, टाइल्स, सीमेन्ट, प्लास्टर का काम भी होता है।

कृषि उत्पादन एवं पशुपालन

जिले में मुख्य रुप से तिलहन, मसाले, ग्वार, बीज, ईसबगोल, जीरा आदि की फसलें होती हैं। रबी में ईसबगोल एवं खरीफ में बाजरा मुख्य फसलें होती हैं: बाड़मेर का ग्वारगम अपनी गुणवत्ता के लिए जाना जाता है। कृषि की दृष्टि से उत्पादन कम व अस्थिर है। मानसून का फेल होना भी काफी हद तक अस्थिरता लाता है।

यहाँ पशुपालन आजीविका का मुख्य स्त्रोत है। पारम्परिक रुप से यहाँ भेड़ एवं बकरी पाली जाती हैं। ऊँटों की संख्या में कमी आई है। गाय, भैंस चूँकि दुधारू पशु हैं अतः उनका महत्व दिन–प्रति–दिन बढ़ रहा है। अकाल में न केवल पशुओं का पलायन हुआ अपितु बड़ी संख्या में पशुओं की मृत्यु भी हुई है। दस दुग्ध संग्रहण केन्द्र हैं जिसमें 475 डेयरी कृषकों की सदस्यता है। 2008–09 में बाड़मेर में 58 वेटरनरी अस्पताल, 47 उपकेन्द्र, 24 गौशालायें थीं जिनसे 8,535 पशुओं को लाभ मिल रहा था।

वित्तीय क्षेत्र

वर्ष 2006–07 में जिले में 760 सहकारी समितियां थीं जिसके 3.10 लाख सदस्य थे। इन समितियों ने 25397.07 लाख रुपये का ऋण दिया गया परन्तु इनकी वसूली दर न्यूनतम थी। यहाँ एक केन्द्रीय सहकारी बैंक है जिसके 295 सदस्य थे। जिले में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक की 28 शाखायें हैं। सार्वजनिक क्षेत्र की 50 वाणिज्यिक बैंक हैं।

योजना निर्माण हेतु विचारार्थ बातें

- मानव विकास की दृष्टि से राजस्थान में जिले का 25वां स्थान है। शिक्षा, स्वास्थ्य तथा आय विकास सूचकांक में क्रमशः 15वां, 16वां तथा 28वां स्थान है।
- सूखा क्षेत्र से लोगों का पलायन।
- मरुस्थलीय क्षेत्र होने पर भी वर्षा के समय बाढ़ आना।. उद्योगों की कमी। रोजगार के अवसरों की कमी।
- फसल पैदावार अनिश्चित। पशुपालन महत्वपूर्ण।
- शिक्षा के फैलाव की आवश्यकता।
- खनन क्षेत्र में व्यापक सम्भावनाएं।

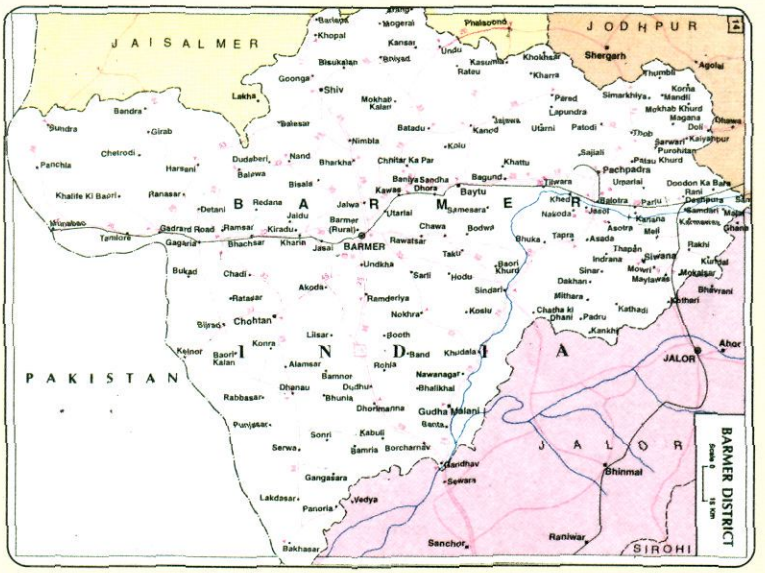

यू. एन. डी. पी.,
भारत सरकार
एवं
आयोजना विभाग
राजस्थान सरकार
जयपुर

सेन्टर फॉर गुड गवर्नेन्स
ह.च.मा. राजस्थान राज्य लोक प्रशासन संस्थान
जयपुर 302017

design by MERCURY